शिक्षक - रवि शंकर राय, विषय - अर्थशास्त्र
दिनांक - 06-11-2020, वर्ग - MA-II

केन्ज का मुद्रा एवं कीमत सिद्धान्त
[Keynesian theory of money and prices]

केन्ज, क्लासीकल अर्थशास्त्रियों के इस बात से सहमत नहीं थे कि मुद्रा के परिमाण तथा कीमतों में प्रत्यक्ष एवं समानुपाती संबंध है। उसका कहना है कि कीमतों पर मुद्रा के परिमाण में परिवर्तन परिवर्तन का प्रभाव अप्रत्यक्ष एवं अननुपातिक (Non-proportional) होता है। इसी संदर्भ में केन्ज द्वारा पुनः व्याख्यित मुद्रा का परिणाम सिद्धान्त (Keynes's Reformulated quantity theory of money) प्रस्तुत किया गया है। केन्ज द्वारा प्रस्तुत यह सिद्धान्त निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है —

1. जब तक अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी रहती है तब तक उत्पादन के सभी साधनों की पूर्ति पूर्ण लोचदार होती है।
2. उत्पादन के सभी साधन समरूप, पूर्णतया विभाज्य एवं परस्पर परिवर्तनशील होते हैं।
3. पैमाने के प्रतिफल स्थिर होते हैं जिसके परिणामस्वरूप उत्पादन बढ़ने पर कीमतें नहीं बढ़ती या घटती।

(4) जब तक कोई भी बेकार संसाधन रहते हैं तब तक प्रभावी मांग तथा मुद्रा का परिमाण उसी पैमाने के अनुपात में बढ़ता है।

उपरोक्त मान्यताओं को दिए हुए होने पर मुद्रा के परिमाण में तथा कीमतों में होने वाले परिवर्तनों के बीच कार्यकरण की कन्वीयन शृंखला ब्याज दर के माध्यम से अप्रत्यक्ष होती है। इस लिए जब मुद्रा का परिणाम बढ़ता है और यदि तरलता अधिमान स्थिर रहता है तो ब्याज दर गिरने लगते हैं। पूंजी की सीमान्त उत्पादकता स्थिर होने पर ब्याज की दर गिरने से निवेश की मात्रा बढ़ेगी। बढ़े हुए निवेश के कारण गुणक प्रभाव के माध्यम से प्रभावी मांग बढ़ेगी जिसके परिणामस्वरूप आय, उत्पादन और रोजगार बढ़ेंगे। चूंकि बेरोजगारी की स्थिति में उत्पादन के साधनों का प्रतिफल पूर्ण लोचदार होता है इस लिए मजदूरी तथा गैर-मजदूरी साधन स्थिर ~~होते~~ ~~है~~ पारिश्रमिक दर उपलब्ध होते हैं। ~~क्योंकि~~ पैमाने के प्रतिफल स्थिर होते हैं इस लिए जब तक थोड़ी सी बेरोजगारी भी रहती है तब तक उत्पादन में वृद्धि होने पर कीमतें नहीं बढ़ेंगी।

इस परिस्थितियों में उत्पादन और रोजगार उसी अनुपात में बढ़ेगे जिस अनुपात में प्रभावी मांग बढ़ती है और जिस अनुपात में मुद्रा का परिणाम बढ़ेगा उसी अनुपात में प्रभावी मांग बढ़ेगी। लेकिन जब एक बार अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार की स्थिति आ जाती है तो मुद्रा की पूर्ति में परिवर्तन होने पर उत्पादन में बिलकुल कोई परिवर्तन नही होता है। परिणाम स्वरूप कीमते भी उसी अनुपात में बढ़ने लगती है।

इस प्रकार केन्ज का पुनः व्यवस्थापित मुद्रा का परिणाम सिद्धान्त कहता है कि अर्थव्यवस्था में जब तक बेरोजगारी रहेगी तब तक जिस अनुपात में मुद्रा का परिणाम बढ़ेगा उसी अनुपात में उत्पादन बढ़ेगा और कीमते में कोई परिवर्तन नही होगा। लेकिन एक बार जब अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार की स्थिति आ जायेगी तो जिस अनुपात में मुद्रा के परिमाण में परिवर्तन होगा उसी अनुपात में कीमतो में भी परिवर्तन होगा। इस प्रकार यह सिद्धांत इस बात पर बल देता है कि मुद्रा के परिणाम में वृद्धि होने पर कीमते तभी बढ़ती है जब पूर्ण रोजगार की स्थिति आ जाती है; उससे पहले नही।

इस पुनः व्यवस्थापित मुद्रा के परिमाण

सिद्धान्त को रेखाचित्र के भाग A तथा भाग B में दिखाया गया है—

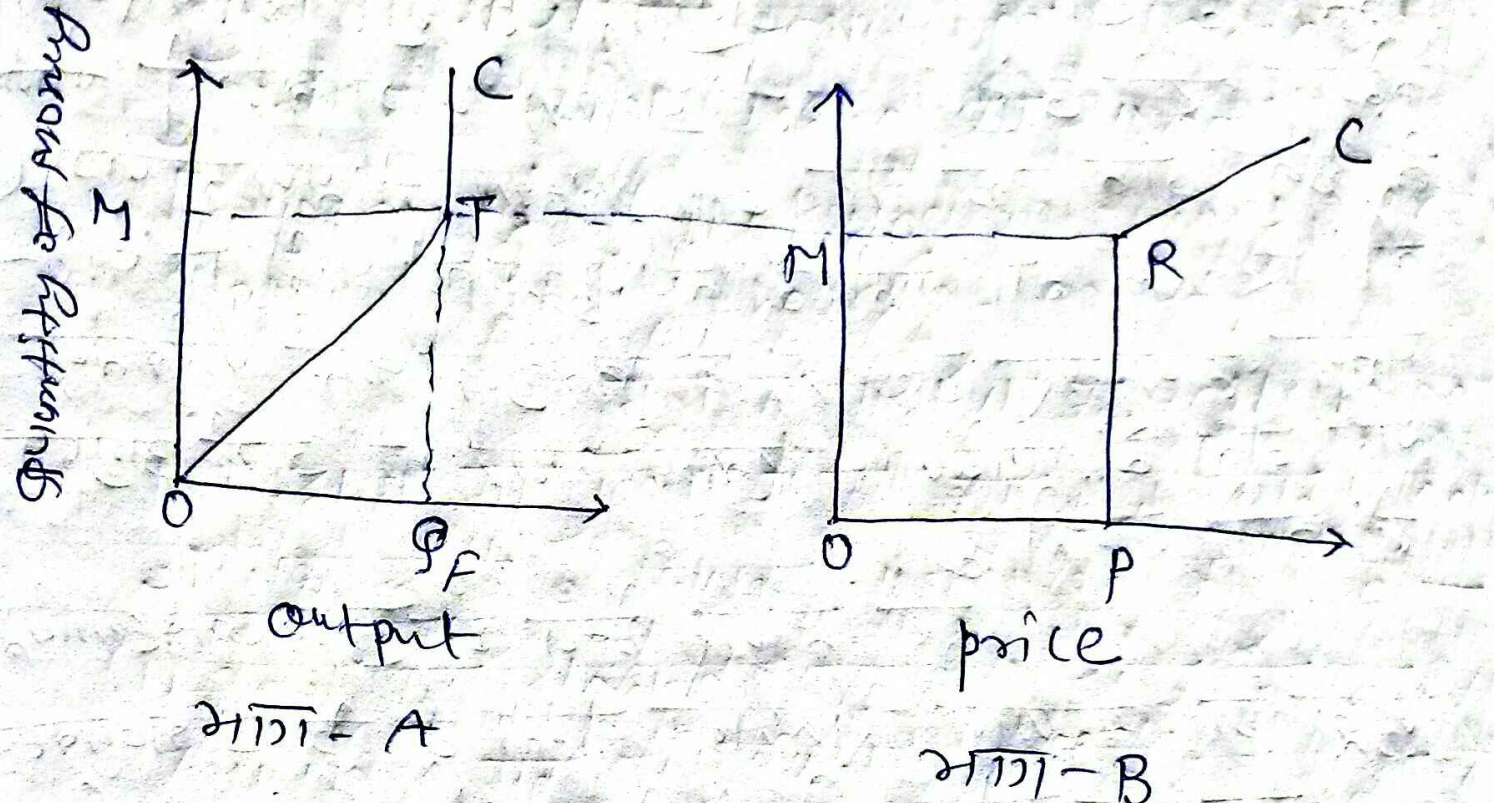

भाग - A

भाग - B

जहाँ OTC तो मुद्रा के परिमाण से संबन्धित उत्पादन वक्र हैं और PRC मुद्रा के परिमाण से सम्बन्धित कीमत वक्र है। रेखाचित्र का भाग A बताता है कि जब मुद्रा का परिमाण O से बढ़कर M पर चला जाता है तो OTC वक्र के OT भाग पर उत्पादन का स्तर भी बढ़ जाता है ~~तो पूर्ण~~ जब मुद्रा का परिमाण OM स्तर पर पहुँच जाता है तो पूर्ण रोजगार की स्थिति OQ_F आ जाती है। अतः T बिन्दु के

बाद उत्पादन वक्र अनुलम्ब हो जाता है; क्योंकि मुद्रा के परिणाम परिमाण में होने वाली और वृद्धि, उत्पादन को पूर्णरोजगार स्तर OQ_F से आगे नहीं बढ़ा सकती।

रेखाचित्र का भाग (B) मुद्रा के परिमाण और कीमतों के बीच सम्बन्ध को व्यक्त करता है। जब तक बेरोजगारी रहेगी, कीमतें स्थिर रहेंगी, चाहे मुद्रा के परिमाण में कितनी भी वृद्धि क्यों न हो। कीमतें तभी बढ़ने लगती जब पूर्णरोजगार का स्तर आ जाता है। रेखाचित्र में उत्पादन पूर्ण रोजगार स्तर OQ_F के अनुरूप मुद्रा के OM परिमाण पर कीमत स्तर OP स्थिर रहता है। परन्तु मुद्रा के परिमाण में OM से आगे होने वाली वृद्धि से कीमतें उसी अनुपात में बढ़ती हैं जिस अनुपात में मुद्रा का परिमाण परिमाण बढ़ता है। इसे कीमत वक्र PRC के RC भाग द्वारा दिखाया गया है।